मध्यमा : द्वितीय वर्ष
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक 250, न्यूनतम : 88
शास्त्र 100, न्यूनतम : 35
क्रियात्मक 150, न्यूनतम : 53

शास्त्र :

१. कथ्थक नृत्य की मंदिर परंपरा और दरबार परंपरा का संपूर्ण ज्ञान ।
   अ. बनारस घराने की विशेषताएँ।
   आ. जयपुर, लखनौ घराने की संपूर्ण परंपरा का ज्ञान (वंश परंपरासहित)।
२. भौ संचालन तथा दृष्टि भेद के प्रकार और उनका प्रयोग (अभिनव दर्पणानुसार) ।
३. लास्य तथा ताण्डव की व्याख्या तथा उनके प्रकार ।
४. तीनताल के ठेके को आधी 1/2 पौनी ¾, कुआड़ी 1-1/4, आडी 1-1/2 (डेढ़ी) , बिआड़ी 1-3/2 (पौने दो) लय में लिपिबध्द करना ।
   1. अभिनय की स्पष्ट परिभाषा ।
   2. आंगिक अभिनय, वाचिक अभिनय, आहार्य – अभिनय, सात्त्विक अभिनय की व्याख्या तथा प्रयोग ।

   b. संयुक्त हस्त की निम्नलिखित मुद्राओं की परिभाषा तथा प्रयोग:

२. चक्र, सम्पुट, पाश, कीलक, मत्स्य, कूर्म, वराह, गरुड, नागबन्ध, खटवा, भेन्ड ।
३. (8) जीवनियाँ– पं. अच्छन महाराज, पं. शंभू महाराज, पं. लच्छुमहाराज,
   i. पं. नारायण प्रसाद, पं. जयलाल ।
   b. तीनताल, रुपक तथा एकताल के सभी बोलों की लिपिबध्द क्रिया।
   c. कथक नृत्य के अध्ययन की शारीरिक, मानसिक और बौध्दिक उपयोगिता।

क्रियात्मक :

श्री शिव वंदना अथवा श्रीकृष्ण वंदना

१. तीन तालमें विशेषताओं सहित:

एक उठान, एक ठाठ, एक आमद, एक परमेलू, एक नटवरी तोड़ा, एक फर्माइशी चक्रदार (पहली धा पहले, दूसरी था दूसरे तथा तीसरी धा तीसरी समपर) एक गणेश परन, एक तत्कार की लड़ी। (तकिट किट धिन)

२. रुपक:

एक ठाठ	एक सादा आमद
चार सादे तोड़े	दो चक्रदार तोड़े
दो परन	दो चक्रदार परन
दो तिहाई	एक कवित्त

तत्कार– बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित

३. एकताल:

दो ठाठ	एक परन जुडी आमद
चार तोड़े	दो चक्करदार तोडे
दो परन	दो चक्रदार परन

एक कवित्त तीन तिहाई
तत्कार- बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन तिहाई सहित ।

४. सीखे हुए सभी बोलों की ताल देकर पढ़न्त करना।
५. गतनिकास में विशेषता : रुखसार, छेड़छाड़, आँचल आदि।
६. गतभाव में कालिया दमन ।
७. 'होरी' पद पर भाव प्रस्तुति ।

मध्यमा द्वितीय वर्ष (पूर्ण) : कुल मौखिक – १५० समय: ४० मिनट
प्रतिछात्र

वंदना	ठाठ	आमद	नटवरी तोडा	परन	परमेलू		
५	५	५	५	५	५		
फरमाईशी चक्रदार	गणेश परन	ततकार	लडी/बाँट	गतभाव	गतनिकास		**अंक 150**
५	५	२०	१०	१०			
रूपक में नृत्य	एकताल में नृत्त	पढन्त	होरीभाव नृत्त	प्रदर्शन			
१५	१५	१५	१०	१५			